National Research Journal of Social Sciences
Volume-11, Issue-1, January-June 2026
PP: 898-906
ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

प्राचीन भारत की आर्थिक स्थिति में श्रेणियों की भूमिका : एक अध्ययन

डॉ. अंजना

असिस्टेंट प्रोफेसर
प्राचीन इतिहास, हे ० नं ० ब० राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नैनी , प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

सार : प्राचीन भारत की आर्थिक व्यवस्था में श्रेणियों (गिल्ड्स) ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। श्रेणी शब्द का प्रयोग उन संगठित समूहों के लिए किया जाता था जो एक ही व्यवसाय, शिल्प अथवा वाणिज्य से जुड़े व्यक्तियों द्वारा साझा हितों की रक्षा, उत्पादन में गुणवत्ता बनाए रखने तथा व्यापार को सुव्यवस्थित करने हेतु गठित किए जाते थे। वैदिक काल से लेकर गुप्तोत्तर काल तक श्रेणियों का क्रमिक विकास हुआ और वे केवल आर्थिक संस्थाएँ ही नहीं रहीं, अपितु सामाजिक, राजनीतिक तथा प्रशासनिक जीवन में भी उनकी सक्रिय भागीदारी रही। यह शोध पत्र प्राचीन भारतीय साहित्यिक स्रोतों (वेद, बौद्ध जातक कथाएँ, अर्थशास्त्र, स्मृतियाँ), पुरातात्विक साक्ष्यों (शिलालेख, मुद्राएँ, ताम्रपत्र) तथा आधुनिक इतिहासकारों के विश्लेषणों के आधार पर श्रेणियों की उत्पत्ति, संगठन, कार्यप्रणाली, आर्थिक योगदान तथा अंततः उनके पतन के कारणों का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि श्रेणियाँ केवल उत्पादन एवं वितरण की इकाइयाँ ही नहीं थीं, बल्कि वे बैंकिंग, ऋण एवं जमा जैसी वित्तीय सेवाएँ भी प्रदान करती थीं तथा राज्य की आर्थिक नीति एवं कराधान व्यवस्था में भी सक्रिय भूमिका निभाती थीं।

मुख्य शब्द: *श्रेणी, गिल्ड, प्राचीन भारत, अर्थव्यवस्था, वाणिज्य, शिल्प, अर्थशास्त्र, बैंकिंग, अभिलेख*

1. प्रस्तावना

प्राचीन भारत की आर्थिक व्यवस्था बहुआयामी और संगठित स्वरूप वाली थी, जिसमें कृषि, पशुपालन, शिल्प, उद्योग, व्यापार तथा वाणिज्यिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण योगदान था। इस आर्थिक व्यवस्था के संचालन में विभिन्न सामाजिक एवं व्यावसायिक संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इनमें **'श्रेणी'** एक प्रमुख आर्थिक एवं व्यावसायिक संस्था के रूप में विकसित हुई। श्रेणियाँ मुख्यतः समान व्यवसाय या शिल्प से जुड़े व्यक्तियों के संगठित समूह होते थे, जो उत्पादन, व्यापार, मूल्य निर्धारण, श्रम व्यवस्था तथा अपने सदस्यों के हितों से संबंधित अनेक कार्यों का संचालन करते थे। प्राचीन भारतीय साहित्य, अभिलेखों तथा पुरातात्त्विक स्रोतों से यह संकेत मिलता है कि श्रेणियाँ केवल व्यावसायिक संगठन नहीं थीं, बल्कि तत्कालीन आर्थिक एवं सामाजिक जीवन की महत्वपूर्ण संस्थाएँ भी थीं।

प्राचीन भारत में आर्थिक गतिविधियों के विस्तार के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के शिल्पकारों और व्यापारियों के संगठन विकसित हुए। कुम्हार, स्वर्णकार, लौहकार, बुनकर, बढ़ई, तेली, व्यापारी तथा अन्य व्यवसायों से जुड़े लोग अपनी-अपनी श्रेणियों में संगठित होते थे। इन श्रेणियों का प्रमुख उद्देश्य अपने व्यवसाय को व्यवस्थित करना, उत्पादन की गुणवत्ता बनाए रखना और सदस्यों के सामूहिक हितों की रक्षा करना था। श्रेणी के सदस्य सामान्यतः अपने व्यवसाय से संबंधित नियमों और परंपराओं का पालन करते थे। इस प्रकार श्रेणियों ने व्यक्तिगत आर्थिक गतिविधियों को सामूहिक संगठन प्रदान किया तथा उत्पादन और वितरण की प्रक्रिया को अधिक व्यवस्थित बनाने में योगदान दिया।

श्रेणियों की भूमिका केवल उत्पादन तक सीमित नहीं थी, बल्कि वे **व्यापार एवं वाणिज्य के विकास** में भी महत्वपूर्ण माध्यम बनीं। प्राचीन भारत में आंतरिक और बाहरी व्यापार के विस्तार के साथ वस्तुओं के उत्पादन, संग्रह, परिवहन और विपणन की आवश्यकता बढ़ी। श्रेणियों ने व्यापारियों और उत्पादकों के बीच समन्वय स्थापित करने तथा बाजार की आवश्यकताओं के अनुसार उत्पादन को व्यवस्थित करने में योगदान दिया। कुछ श्रेणियाँ अपने सदस्यों के लिए आर्थिक सहायता, ऋण और सामूहिक वित्तीय व्यवस्था से संबंधित कार्य भी करती थीं। इस प्रकार उन्होंने आर्थिक लेन-देन में विश्वास और स्थायित्व उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था में श्रेणियों का **वित्तीय और संस्थागत महत्व** भी उल्लेखनीय था। कई स्थानों पर श्रेणियाँ सामूहिक निधि का निर्माण करती थीं तथा उनके पास पर्याप्त आर्थिक संसाधन होते थे। इन निधियों का उपयोग सदस्यों की आवश्यकताओं के साथ-साथ धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में भी किया जाता था। अभिलेखीय प्रमाणों से ज्ञात होता है कि कुछ श्रेणियों ने मंदिरों, धार्मिक संस्थाओं, जल-सुविधाओं तथा अन्य सार्वजनिक कार्यों के लिए दान और आर्थिक सहायता प्रदान की। इससे स्पष्ट होता है कि श्रेणियाँ केवल उत्पादन और व्यापार की इकाइयाँ नहीं थीं, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था और सामाजिक जीवन में भी उनका प्रभाव था।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

श्रेणियों ने **कारीगरों के कौशल, उत्पादन की गुणवत्ता और व्यावसायिक अनुशासन** को बनाए रखने में भी योगदान दिया। किसी विशेष व्यवसाय से जुड़े लोगों के सामूहिक संगठन के कारण तकनीकी ज्ञान और व्यावसायिक परंपराओं का हस्तांतरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संभव हुआ। श्रेणियाँ अपने सदस्यों के लिए व्यवसाय संबंधी नियम निर्धारित करती थीं और उनके पालन पर बल देती थीं। इससे वस्तुओं की गुणवत्ता और उत्पादन की निरंतरता बनाए रखने में सहायता मिलती थी। साथ ही, श्रेणी व्यवस्था ने कारीगरों और व्यापारियों को सामूहिक पहचान प्रदान की तथा आर्थिक गतिविधियों में उनकी सौदेबाजी की क्षमता को मजबूत किया।

अतः **प्राचीन भारत की आर्थिक स्थिति को समझने के लिए श्रेणियों का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है।** श्रेणियाँ उत्पादन, व्यापार, वित्त, श्रम-संगठन, बाजार व्यवस्था तथा सामाजिक-धार्मिक गतिविधियों से जुड़ी बहुआयामी संस्थाएँ थीं। उन्होंने प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था को संगठित एवं गतिशील बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। श्रेणियों के अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारत में आर्थिक गतिविधियाँ केवल व्यक्तिगत स्तर पर संचालित नहीं होती थीं, बल्कि उनके पीछे विकसित सामूहिक एवं संस्थागत व्यवस्थाएँ भी मौजूद थीं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य इसी संदर्भ में प्राचीन भारत की आर्थिक संरचना में श्रेणियों की प्रकृति, संगठन, कार्यप्रणाली और योगदान का विश्लेषण करना तथा यह समझना है कि इन संस्थाओं ने तत्कालीन उत्पादन, व्यापार और आर्थिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य प्राचीन भारतीय श्रेणियों की उत्पत्ति एवं ऐतिहासिक विकास, उनके संगठनात्मक स्वरूप, कार्यप्रणाली तथा विशेष रूप से तत्कालीन आर्थिक जीवन में उनकी भूमिका का समग्र एवं क्रमबद्ध विश्लेषण प्रस्तुत करना है। इसके साथ ही श्रेणियों की विधिक स्थिति, राज्य के साथ उनके संबंध तथा गुप्तोत्तर काल में उनके क्रमिक ह्रास के कारणों की भी विवेचना की गई है।

1.1 अध्ययन के उद्देश्य

- श्रेणी संस्था की अवधारणा एवं ऐतिहासिक विकास-क्रम को समझना।
- श्रेणियों के संगठनात्मक ढाँचे तथा प्रशासनिक स्वरूप का विश्लेषण करना।
- प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था में श्रेणियों के आर्थिक योगदान का मूल्यांकन करना।
- श्रेणियों की विधिक स्थिति तथा राज्य-सत्ता के साथ उनके संबंधों का अध्ययन करना।
- साहित्यिक एवं पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर श्रेणियों के अस्तित्व की पुष्टि करना।
- श्रेणी व्यवस्था के पतन के कारणों की पड़ताल करना।

1.2 शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक स्रोतों (वेद, जातक कथाएँ, अर्थशास्त्र, स्मृति ग्रंथ, अभिलेख) तथा द्वितीयक स्रोतों (आधुनिक इतिहासकारों की कृतियाँ एवं शोध पत्रिकाएँ) का उपयोग करते हुए विषय-वस्तु का ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

2. श्रेणी की अवधारणा एवं परिभाषा

श्रेणी को व्यापक अर्थ में उन व्यक्तियों के स्वैच्छिक संगठन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो समान पेशे, शिल्प, वाणिज्य अथवा उद्योग से संबद्ध होकर अपने सामूहिक आर्थिक एवं सामाजिक हितों की रक्षा हेतु एकजुट होते थे। पाणिनि की अष्टाध्यायी में श्रेणी को समूहबद्ध संगठनों के रूप में उल्लेखित किया गया है, जबकि अर्थशास्त्र में इसे 'शिल्प-श्रेणी' और 'वाणिज्य-श्रेणी' जैसे रूपों में वर्गीकृत किया गया है।

प्रसिद्ध इतिहासकार आर.सी. मजूमदार के अनुसार श्रेणी एक ऐसी संस्था थी जो एक ही व्यवसाय के लोगों के हितों की रक्षा के लिए बनाई गई थी और जिसके अपने नियम, अपना प्रशासन तथा अपनी न्याय-व्यवस्था होती थी। आर.एस. शर्मा ने श्रेणियों को उत्पादन-संबंधों की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानते हुए इन्हें प्राचीन भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ बताया है। मोतीचंद्र तथा अन्य विद्वानों ने श्रेणियों को वाणिज्यिक तथा औद्योगिक संगठनों के रूप में विवेचित किया है, जो आधुनिक 'व्यापारिक संघ' (Trade Union) अथवा 'निगम' (Corporation) की संकल्पना के निकट प्रतीत होती हैं।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

श्रेणी की तुलना यद्यपि यूरोपीय गिल्ड व्यवस्था से की जाती है, परंतु दोनों में मौलिक अंतर यह था कि भारतीय श्रेणियों को राज्य से अधिक स्वायत्तता प्राप्त थी और वे प्रायः अपने आंतरिक मामलों में स्वयं ही निर्णय लेने में सक्षम थीं। इसके अतिरिक्त भारतीय समाज की जाति-व्यवस्था के साथ भी श्रेणियों का घनिष्ठ संबंध था, क्योंकि अनेक श्रेणियाँ कालांतर में जाति के रूप में परिवर्तित हो गईं।

तालिका 1: श्रेणी से संबंधित प्रमुख शब्दावली

क्र.सं.	शब्द	अर्थ / संदर्भ
1	श्रेणी	समान व्यवसाय, शिल्प या वाणिज्य से जुड़े व्यक्तियों का संगठित समूह
2	श्रेष्ठिन्	श्रेणी अथवा नगर का प्रमुख, प्रायः वित्तीय क्षेत्र से जुड़ा बड़ा साहूकार
3	ज्येष्ठक	श्रेणी का प्रधान अथवा मुखिया, कार्यकारिणी का नेता
4	सार्थवाह	व्यापारिक काफिले का प्रमुख / अंतर्देशीय व्यापार का संचालक
5	निगम	व्यापक व्यापारिक संगठन, प्रायः कई श्रेणियों का समूह
6	पूग	स्थानीय स्तर पर संगठित लोगों का समूह, प्रायः गैर-व्यावसायिक
7	गण	सामूहिक शासन-प्रणाली से जुड़ा संगठन, कभी-कभी श्रेणी के अर्थ में भी प्रयुक्त

स्रोत: अर्थशास्त्र, स्मृति ग्रंथ एवं आधुनिक इतिहासकारों के विवरणों के आधार पर संकलित

3. श्रेणियों का ऐतिहासिक विकास

3.1 वैदिक काल

श्रेणी संस्था के प्रारंभिक संकेत ऋग्वेद में मिलते हैं, जहाँ 'गण' शब्द का प्रयोग संगठित समूहों के लिए किया गया है। इस काल में अर्थव्यवस्था मुख्यतः पशुपालन एवं कृषि पर आधारित थी, किन्तु बढ़ई, कुम्हार, स्वर्णकार, चर्मकार आदि शिल्पियों का उल्लेख भी वैदिक साहित्य में मिलता है, जो संभवतः प्रारंभिक व्यावसायिक समूहों के रूप में संगठित होने लगे थे।

3.2 उत्तर-वैदिक एवं बौद्ध काल (छठी शताब्दी ई.पू. के आसपास)

छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास द्वितीय नगरीकरण के साथ ही श्रेणी व्यवस्था का सुव्यवस्थित रूप सामने आया। इस काल में गंगा घाटी में अनेक समृद्ध नगर (श्रावस्ती, वाराणसी, राजगृह, वैशाली आदि) विकसित हुए, जहाँ व्यापार एवं शिल्प उद्योग का तीव्र विस्तार हुआ। बौद्ध जातक कथाओं में अठारह प्रमुख श्रेणियों (अट्ठारह सेणी) का उल्लेख मिलता है, जिनमें काष्ठकार, लौहकार, स्वर्णकार, चर्मकार, वस्त्र-निर्माता आदि सम्मिलित थे। बनारस को उस काल में विशेष रूप से वस्त्र-उद्योग तथा हाथीदाँत उद्योग का प्रमुख केंद्र माना जाता था।

3.3 मौर्य काल

मौर्य काल में श्रेणी व्यवस्था अत्यंत सुसंगठित रूप में विकसित हो चुकी थी। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में श्रेणियों के विस्तृत विवरण मिलते हैं, जिसमें राज्य द्वारा श्रेणियों के नियमन, कराधान तथा उनके साथ संबंधों का उल्लेख है। इस काल में राज्य ने श्रेणियों को मान्यता प्रदान की तथा उनके नियमों को विधिक स्वीकृति भी दी, बशर्ते वे राज्य के व्यापक हितों के विरुद्ध न हों।

3.4 शुंग-सातवाहन एवं कुषाण काल

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

इस काल में श्रेणियों का आर्थिक महत्व और अधिक बढ़ गया, विशेष रूप से पश्चिमी भारत (नासिक, कार्ले, जुन्नार आदि) की गुफाओं के अभिलेखों से यह स्पष्ट होता है कि श्रेणियाँ ऋण देने तथा व्याज पर धन जमा रखने का कार्य भी करती थीं। सातवाहन शासकों के अभिलेखों में विभिन्न श्रेणियों को दिए गए दान का उल्लेख मिलता है, जिससे इनकी वित्तीय सुदृढ़ता का पता चलता है।

3.5 गुप्त काल: स्वर्ण युग

गुप्त काल को श्रेणी व्यवस्था का चरमोत्कर्ष काल माना जाता है। इस काल में श्रेणियों को अत्यधिक स्वायत्तता प्राप्त थी और वे अपनी मुहर (सील) का प्रयोग करती थीं, जिन पर श्रेणी का नाम एवं प्रतीक चिन्ह अंकित होता था। बसाढ़ तथा अन्य स्थलों से प्राप्त मुद्राओं एवं मुहरों से यह प्रमाणित होता है कि श्रेणियाँ न्यायिक कार्य भी संपन्न करती थीं और उनके आंतरिक विवादों का निपटारा स्वयं श्रेणी की पंचायत करती थी। बृहस्पति स्मृति एवं नारद स्मृति में श्रेणियों के नियमों को राजकीय विधि के समान मान्यता दी गई है।

3.6 गुप्तोत्तर काल

सातवीं शताब्दी के पश्चात् श्रेणी व्यवस्था में क्रमिक ह्रास के लक्षण दिखाई देने लगे। ह्वेनसांग के यात्रा-विवरण तथा तत्कालीन अभिलेखों से पता चलता है कि यद्यपि श्रेणियाँ अस्तित्व में रहीं, किन्तु उनकी आर्थिक स्वायत्तता तथा गतिशीलता में कमी आई, जिसके अनेक कारण थे, जिनकी विवेचना इस शोध पत्र के अंतिम भाग में की गई है।

तालिका 2: श्रेणियों के ऐतिहासिक विकास की समय-रेखा

काल	अनुमानित समयावधि	प्रमुख विशेषताएँ
वैदिक काल	लगभग 1500-600 ई.पू.	प्रारंभिक शिल्प-समूहों का उदय; 'गण' शब्द का प्रयोग
बौद्ध काल	600-300 ई.पू.	अट्ठारह श्रेणियों का उल्लेख; नगरीकरण के साथ विस्तार
मौर्य काल	322-185 ई.पू.	अर्थशास्त्र में श्रेणियों का विधिक विवरण; राजकीय नियमन
शुंग-सातवाहन काल	185 ई.पू. - 220 ई.	बैंकिंग कार्य; गुफा-अभिलेखों में दान का उल्लेख
कुषाण काल	पहली-तीसरी शताब्दी ई.	अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से जुड़ाव; रेशम मार्ग व्यापार
गुप्त काल	320-550 ई.	श्रेणियों की पूर्ण स्वायत्तता; अपनी मुहरों का प्रयोग; स्वर्ण युग
गुप्तोत्तर काल	550 ई. के पश्चात्	क्रमिक ह्रास; सामंतवाद का उदय; व्यापार में कमी

स्रोत: आर.एस. शर्मा, आर.सी. मजूमदार तथा अन्य प्राचीन भारतीय इतिहास संबंधी कृतियों के आधार पर संकलित

4. श्रेणियों के प्रकार

प्राचीन भारतीय साहित्य में श्रेणियों को उनके कार्यक्षेत्र के आधार पर मुख्यतः तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है — शिल्प श्रेणियाँ, वाणिज्य श्रेणियाँ तथा सेवा श्रेणियाँ। इसके अतिरिक्त कुछ श्रेणियाँ मिश्रित प्रकृति की भी थीं, जो उत्पादन के साथ-साथ व्यापार का कार्य भी करती थीं।

तालिका 3: श्रेणियों का वर्गीकरण एवं उदाहरण

प्रकार	विवरण	उदाहरण
शिल्प श्रेणी	उत्पादन कार्य से जुड़े कारीगरों का संगठन	स्वर्णकार, लौहकार, काष्ठकार, कुम्भकार, चर्मकार श्रेणी
वाणिज्य श्रेणी	क्रय-विक्रय एवं व्यापार से जुड़े व्यापारियों का संगठन	वस्त्र-व्यापारी श्रेणी, तेल-व्यापारी श्रेणी, अन्न-व्यापारी श्रेणी

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

सेवा श्रेणी	सेवाएँ प्रदान करने वाले व्यक्तियों का संगठन	नाई श्रेणी, धोबी श्रेणी, लेखक श्रेणी
वित्तीय श्रेणी	ऋण एवं जमा से जुड़े साहूकारों / श्रेष्ठियों का संगठन	श्रेष्ठि-श्रेणी, महाजन-श्रेणी
सामुद्रिक व्यापार श्रेणी	समुद्री मार्ग से विदेश व्यापार करने वाले समूह	नाविक श्रेणी, सार्थवाह संगठन

स्रोत: जातक कथाएँ, अर्थशास्त्र तथा शिलालेखीय साक्ष्यों के आधार पर संकलित

5. श्रेणियों का संगठनात्मक ढाँचा

श्रेणी का संगठनात्मक स्वरूप अत्यंत सुव्यवस्थित था। प्रत्येक श्रेणी का एक प्रधान होता था, जिसे 'ज्येष्ठक' अथवा 'श्रेष्ठिन्' कहा जाता था। उसकी सहायता के लिए एक कार्यकारिणी समिति होती थी, जिसमें प्रायः दो से पाँच सदस्य होते थे, जिन्हें 'कार्य-चिन्तक' कहा जाता था। ये पदाधिकारी श्रेणी के दैनिक प्रशासन, विवाद-निपटारे, मूल्य-निर्धारण तथा राज्य के साथ संबंधों का संचालन करते थे।

बृहस्पति स्मृति के अनुसार श्रेणी के प्रधान का चुनाव सामान्यतः उसकी योग्यता, अनुभव तथा नैतिक चरित्र के आधार पर सदस्यों की सहमति से किया जाता था। श्रेणी के अपने लिखित नियम होते थे, जिन्हें 'श्रेणी-धर्म' अथवा 'समय' कहा जाता था, जो सदस्यों के आचरण, व्यापारिक शर्तों, मूल्य-निर्धारण तथा सदस्यता के नियमों को विनियमित करते थे। इन नियमों का उल्लंघन करने पर दंड का भी प्रावधान था, जिसमें जुर्माने से लेकर सदस्यता समाप्त करने तक की व्यवस्था सम्मिलित थी।

श्रेणियों की अपनी न्यायिक व्यवस्था भी होती थी। मनुस्मृति एवं याज्ञवल्क्य स्मृति में उल्लेख है कि श्रेणी के आंतरिक विवादों का निपटारा प्रथमतः श्रेणी की पंचायत द्वारा ही किया जाता था, और राजकीय न्यायालय केवल तभी हस्तक्षेप करते थे जब मामला श्रेणी के अधिकार-क्षेत्र से बाहर होता अथवा श्रेणी स्वयं समाधान में असफल रहती।

तालिका 4: श्रेणी के प्रमुख पदाधिकारी एवं उनके कार्य

पद	कार्य
ज्येष्ठक / श्रेष्ठिन्	श्रेणी का प्रधान; समग्र प्रशासन एवं राज्य के साथ संपर्क का दायित्व
कार्य-चिन्तक (कार्यकारिणी सदस्य)	दैनिक प्रबंधन, वित्तीय लेखा-जोखा एवं विवाद-निपटारे में सहयोग
सार्थवाह	अंतर्देशीय एवं सामुद्रिक व्यापारिक काफिलों का संचालन
लेखक / गणक	श्रेणी के आय-व्यय तथा सदस्यता का अभिलेखन

6. श्रेणियों के कार्य एवं उद्देश्य

श्रेणियाँ बहुउद्देशीय संस्थाएँ थीं, जिनका कार्यक्षेत्र केवल आर्थिक गतिविधियों तक सीमित नहीं था, अपितु सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्रों तक भी विस्तृत था।

- उत्पादन में गुणवत्ता एवं मानकों को सुनिश्चित करना।
- वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्य-निर्धारण को नियंत्रित करना, ताकि अनुचित प्रतिस्पर्धा न हो।
- सदस्यों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करना, विशेषकर शिल्प-कौशल के हस्तांतरण हेतु शिष्य-प्रणाली।
- सदस्यों तथा उनके परिवारों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना, जैसे वृद्धावस्था, बीमारी अथवा मृत्यु की स्थिति में सहायता।
- आंतरिक विवादों का निपटारा तथा अनुशासन बनाए रखना।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

- राज्य के साथ मध्यस्थता करते हुए कर-संग्रहण में सहयोग देना।
- धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों जैसे मंदिर-निर्माण, दान इत्यादि में सामूहिक योगदान देना।

7. प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था में श्रेणियों की भूमिका

प्राचीन भारत की आर्थिक स्थिति में श्रेणियों की भूमिका बहुआयामी थी। निम्नलिखित उप-शीर्षकों के अंतर्गत इनके योगदान का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

7.1 उत्पादन एवं शिल्प-उद्योग में भूमिका

श्रेणियों ने शिल्प-उत्पादन को संगठित रूप प्रदान किया। प्रत्येक श्रेणी अपने विशिष्ट उत्पाद के निर्माण की तकनीक, गुणवत्ता तथा मानकों को सुनिश्चित करती थी, जिससे उत्पादों की विश्वसनीयता बढ़ती थी। कुशल कारीगरों को प्रशिक्षित करने की परंपरा भी श्रेणियों के माध्यम से ही आगे बढ़ी, जिससे पीढ़ी-दर-पीढ़ी शिल्प-कौशल का हस्तांतरण सुनिश्चित हुआ।

7.2 आंतरिक एवं विदेश व्यापार में भूमिका

श्रेणियाँ अंतर्देशीय व्यापार मार्गों की सुरक्षा एवं सुविधा में सहयोग करती थीं। सार्थवाह के नेतृत्व में व्यापारिक काफिले संगठित होकर एक नगर से दूसरे नगर तथा एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र तक वस्तुओं का परिवहन करते थे। सामुद्रिक व्यापार में भी श्रेणियों की भूमिका उल्लेखनीय थी — पश्चिमी तट पर भड़ौच, कल्याण, सोपारा तथा पूर्वी तट पर ताम्रलिप्ति जैसे बंदरगाहों से रोमन साम्राज्य, दक्षिण-पूर्व एशिया एवं मध्य एशिया के साथ व्यापार में श्रेणियों की सक्रिय भागीदारी के प्रमाण मिलते हैं।

7.3 वित्तीय संस्था के रूप में भूमिका (बैंकिंग कार्य)

श्रेणियों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण किन्तु प्रायः कम चर्चित पहलू उनकी बैंकिंग गतिविधियाँ थीं। नासिक की गुफाओं के अभिलेखों से पता चलता है कि लोग श्रेणियों के पास स्थायी जमा (Permanent Deposit) रखते थे, जिस पर श्रेणी निश्चित ब्याज दर से आय अर्जित कर उसका उपयोग धार्मिक अथवा सामाजिक कार्यों में करती थी। कुछ अभिलेखों में ब्याज दर का भी उल्लेख मिलता है, जो सामान्य ऋण हेतु अपेक्षाकृत कम तथा जोखिम भरे सामुद्रिक व्यापार हेतु उधार में अधिक होती थी।

7.4 मूल्य-निर्धारण एवं गुणवत्ता नियंत्रण

श्रेणियाँ अपने उत्पादों तथा सेवाओं के मूल्य स्वयं निर्धारित करती थीं, जिन्हें प्रायः राज्य की भी स्वीकृति प्राप्त होती थी। अर्थशास्त्र में उल्लेख है कि राज्य द्वारा नियुक्त 'पण्याध्यक्ष' (वाणिज्य अधीक्षक) श्रेणियों के साथ परामर्श कर उचित मूल्य निर्धारित करता था, जिससे उपभोक्ताओं का शोषण रोका जा सके।

7.5 राजस्व एवं कराधान में योगदान

श्रेणियाँ राज्य को नियमित रूप से कर का भुगतान करती थीं, जो राजकीय कोष के महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक था। बदले में राज्य श्रेणियों को संरक्षण प्रदान करता था तथा उनके आंतरिक नियमों को विधिक मान्यता देता था। यह पारस्परिक संबंध राज्य एवं श्रेणी दोनों के हित में था।

7.6 रोजगार सृजन एवं सामाजिक स्थिरता

श्रेणियों ने बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार प्रदान किया तथा आर्थिक गतिविधियों में स्थिरता बनाए रखी। शिष्य-प्रणाली के माध्यम से नवयुवकों को शिल्प-प्रशिक्षण मिलता था, जिससे बेरोजगारी में कमी आती थी और सामाजिक स्तर पर भी एक व्यवस्थित ढाँचा स्थापित होता था।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

तालिका 5: श्रेणियों की प्रमुख आर्थिक भूमिकाओं का सारांश

क्षेत्र	भूमिका	साक्ष्य / स्रोत
उत्पादन	गुणवत्ता नियंत्रण, कौशल प्रशिक्षण	जातक कथाएँ, अर्थशास्त्र
व्यापार	अंतर्देशीय एवं सामुद्रिक व्यापार का संचालन	नासिक-कार्ले गुफा अभिलेख
बैंकिंग	जमा स्वीकृति, ब्याज पर ऋण	नासिक अभिलेख, गुप्तकालीन ताम्रपत्र
कराधान	राजस्व का नियमित भुगतान	अर्थशास्त्र
मूल्य नियमन	वस्तुओं के उचित मूल्य का निर्धारण	अर्थशास्त्र, स्मृति ग्रंथ
रोजगार	प्रशिक्षण एवं आजीविका के अवसर	जातक कथाएँ

8. श्रेणियों की विधिक स्थिति

प्राचीन भारतीय विधि-ग्रंथों में श्रेणियों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में श्रेणियों के नियमन संबंधी विस्तृत प्रावधान मिलते हैं, जिनमें उनके पंजीकरण, कराधान तथा राज्य के साथ संबंधों का उल्लेख है। मनुस्मृति में श्रेणी के नियमों को 'श्रेणी-धर्म' कहा गया है तथा इसका पालन न करने पर दंड का भी विधान है।

याज्ञवल्क्य स्मृति एवं बृहस्पति स्मृति में तो श्रेणियों के नियमों को राजकीय विधि के समकक्ष मान्यता दी गई है, बशर्ते वे धर्मशास्त्र के मूल सिद्धांतों तथा राज्य के व्यापक हितों के विरुद्ध न हों। इससे स्पष्ट होता है कि श्रेणियों को एक सीमा तक स्व-शासन (Self-governance) का अधिकार प्राप्त था, जो उन्हें एक अर्ध-स्वायत्त संस्था का स्वरूप प्रदान करता था।

नारद स्मृति में श्रेणी, गण, पूग, तथा निगम — इन चारों संगठनों के अधिकारों का पृथक-पृथक उल्लेख करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि इनके आंतरिक निर्णयों में राजा का हस्तक्षेप न्यूनतम होना चाहिए, जब तक कि वे न्याय के मूल सिद्धांतों का उल्लंघन न करें।

9. साहित्यिक एवं पुरातात्विक साक्ष्य

श्रेणियों के अस्तित्व एवं कार्यप्रणाली की पुष्टि अनेक साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्रोतों से होती है। साहित्यिक स्रोतों में वेद, बौद्ध जातक कथाएँ, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, नारद स्मृति तथा बृहस्पति स्मृति प्रमुख हैं। पुरातात्विक साक्ष्यों में शिलालेख, ताम्रपत्र, मुद्राएँ तथा मुहरें सम्मिलित हैं, जिनमें से अनेक पश्चिमी भारत की बौद्ध गुफाओं (नासिक, कार्ले, जुन्नार) से प्राप्त हुए हैं।

तालिका 6: श्रेणियों से संबंधित प्रमुख साक्ष्य

स्रोत का प्रकार	स्रोत का नाम	श्रेणियों से संबंधित जानकारी
साहित्यिक (बौद्ध)	जातक कथाएँ	अठारह प्रमुख श्रेणियों का उल्लेख; बनारस जैसे नगरों में शिल्प-केंद्र
साहित्यिक (राजनीतिक शास्त्र)	कौटिल्य का अर्थशास्त्र	श्रेणियों के नियमन, कराधान तथा प्रशासन संबंधी प्रावधान
साहित्यिक (स्मृति ग्रंथ)	मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति	श्रेणी-धर्म तथा दंड-व्यवस्था का उल्लेख
साहित्यिक (स्मृति ग्रंथ)	नारद स्मृति, बृहस्पति स्मृति	श्रेणी के नियमों को राजकीय विधि के समान मान्यता
पुरातात्विक (अभिलेख)	नासिक एवं कार्ले गुफा अभिलेख	श्रेणियों में स्थायी जमा एवं ब्याज-दर का उल्लेख

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

पुरातात्विक (अभिलेख)	गुप्तकालीन ताम्रपत्र	श्रेणियों की मुहरों तथा स्वायत्तता के प्रमाण
विदेशी यात्रा-विवरण	फाह्यान एवं ह्वेनसांग के विवरण	व्यापारिक नगरों तथा श्रेणियों की समृद्धि का उल्लेख

स्रोत: विभिन्न प्राथमिक स्रोतों एवं आधुनिक शोध-कार्यों के आधार पर संकलित

10. प्रमुख श्रेणियों के उदाहरण

निम्नलिखित तालिका में साहित्यिक एवं अभिलेखीय स्रोतों में उल्लिखित कुछ प्रमुख श्रेणियों तथा उनके कार्यक्षेत्रों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

श्रेणी का नाम	कार्यक्षेत्र	प्रमुख केंद्र
तैलिक श्रेणी	तेल उत्पादन एवं व्यापार	मथुरा, नासिक क्षेत्र
कुलालिक श्रेणी (कुम्भकार)	मृद्भांड निर्माण	उत्तर भारत के विभिन्न नगर
स्वर्णकार श्रेणी	आभूषण निर्माण	श्रावस्ती, वाराणसी
वर्धकी श्रेणी (काष्ठकार)	काष्ठ-शिल्प एवं भवन-निर्माण	राजगृह, वैशाली
वस्त्र-व्यापारी श्रेणी	वस्त्र उत्पादन एवं व्यापार	बनारस (वाराणसी), उज्जयिनी
नाविक / सार्थवाह श्रेणी	सामुद्रिक एवं स्थल व्यापार	भड़ौच, सोपारा, ताम्रलिप्ति

11. श्रेणी व्यवस्था के पतन के कारण

गुप्तोत्तर काल में श्रेणी व्यवस्था के क्रमिक ह्रास के अनेक कारण इतिहासकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं।

- सामंतवाद का उदय: भू-दान की बढ़ती प्रवृत्ति एवं सामंती व्यवस्था के विकास से नकद अर्थव्यवस्था का महत्व कम हुआ, जिससे व्यापारिक गतिविधियाँ प्रभावित हुईं।
- विदेश व्यापार में गिरावट: रोमन साम्राज्य के पतन तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय परिवर्तनों के कारण भारत के पश्चिम एशिया एवं यूरोप के साथ व्यापार में कमी आई।
- नगरीय पतन: अनेक प्रमुख व्यापारिक नगरों का ह्रास हुआ, जिससे श्रेणियों का आर्थिक आधार कमजोर पड़ा।
- मुद्रा-प्रचलन में कमी: स्वर्ण एवं चाँदी की मुद्राओं के प्रचलन में कमी से वस्तु-विनिमय प्रणाली पुनः महत्वपूर्ण होने लगी, जिससे संगठित व्यापार प्रभावित हुआ।
- राजनीतिक विखंडन: गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात् राजनीतिक अस्थिरता एवं क्षेत्रीय विखंडन ने व्यापार मार्गों की सुरक्षा को प्रभावित किया।
- जाति-व्यवस्था में विलय: अनेक श्रेणियाँ कालांतर में जातियों में परिवर्तित हो गईं, जिससे उनकी मूल आर्थिक प्रकृति एवं गतिशीलता क्षीण हुई।

12. निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि श्रेणियाँ प्राचीन भारत की आर्थिक व्यवस्था की आधारशिला थीं। वैदिक काल के प्रारंभिक शिल्प-समूहों से लेकर गुप्त काल की अत्यंत सुसंगठित एवं स्वायत्त संस्थाओं तक श्रेणियों का विकास प्राचीन भारतीय समाज की आर्थिक परिपक्वता

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

का प्रमाण है। इन्होंने न केवल उत्पादन एवं व्यापार को संगठित रूप प्रदान किया, बल्कि बैंकिंग, सामाजिक सुरक्षा, न्याय-निर्णय तथा राजस्व-संग्रहण जैसे बहुआयामी कार्यों के माध्यम से तत्कालीन आर्थिक एवं सामाजिक जीवन को स्थिरता तथा दिशा भी प्रदान की।

श्रेणियों का राज्य के साथ पारस्परिक सहयोग का संबंध यह दर्शाता है कि प्राचीन भारतीय राज्य-व्यवस्था आर्थिक संगठनों की स्वायत्तता का सम्मान करते हुए भी उन्हें व्यापक राजकीय ढाँचे के अंतर्गत सुव्यवस्थित रखने में सफल रही। यद्यपि गुप्तोत्तर काल में सामंतवाद के उदय, नगरीय पतन तथा विदेश व्यापार में गिरावट के कारण श्रेणी व्यवस्था क्षीण होती गई, तथापि इसकी विरासत भारतीय आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में मध्यकाल तथा आधुनिक काल तक विभिन्न रूपों (जैसे जाति-आधारित व्यावसायिक संगठन तथा व्यापारिक संघ) में परिलक्षित होती रही।

समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि श्रेणी व्यवस्था के अध्ययन से हमें प्राचीन भारत की आर्थिक संरचना, सामाजिक संगठन तथा राज्य-समाज संबंधों की गहन समझ प्राप्त होती है, जो आधुनिक आर्थिक संस्थाओं एवं सहकारी संगठनों के ऐतिहासिक मूल को समझने में भी सहायक सिद्ध होती है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, आर.एस., प्राचीन भारत का आर्थिक इतिहास, दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
2. मजूमदार, आर.सी., कॉर्पोरेट लाइफ इन एंशिएंट इंडिया, कलकत्ता विश्वविद्यालय।
3. मोतीचंद्र, सार्थवाह: प्राचीन भारतीय व्यापार, इलाहाबाद।
4. कौटिल्य, अर्थशास्त्र (अनुवाद एवं टीका सहित), विभिन्न संस्करण।
5. थापर, रोमिला, प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
6. मैक्समूलर तथा अन्य (सं.), जातक कथाएँ (हिंदी अनुवाद), विभिन्न संस्करण।
7. अल्तेकर, ए.एस., स्टेट एंड गवर्नमेंट इन एंशिएंट इंडिया, मोतीलाल बनारसीदास।
8. चक्रवर्ती, रणबीर, एक्सप्लोरिंग अर्ली इंडिया: अप टू सी. ए.डी. 1300, मैकमिलन इंडिया।
9. मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, नारद स्मृति, बृहस्पति स्मृति (विभिन्न हिंदी अनुवादित संस्करण)।
10. जायसवाल, के.पी., हिंदू पॉलिटी: ए कंस्टीट्यूशनल हिस्ट्री ऑफ इंडिया इन हिंदू टाइम्स, बंगलौर प्रिंटिंग एंड पब्लिशिंग।

© Copyright @ Authors